हास्यरस

ज्ञानरंजन

हास्यरस

ज्ञानरंजन

ज्ञानरंजन

जन्म : 21 नवंबर, 1936, अकोला, महाराष्ट्र में। प्रारम्भिक जीवन निरंतर प्रवास में बीता – महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश में।

पिता श्री रामनाथ सुमन प्रख्यात गाँधीवादी विचारक, लेखक और पत्रकार, छायावाद काल के प्रमुख आलोचकों में थे। उनकी यायावरी का गहरा असर।

शिक्षा : एम०ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय से।

जीविका : जबलपुर विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर, पैंतीस वर्षों तक हिंदी की साहित्यिक पत्रिका 'पहल' के संपादक।

सम्मान : सोवियत लैण्ड नेहरू अवार्ड, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के साहित्य भूषण पुरस्कार, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् के सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार, शिखर सम्मान (भोपाल), प्रतिभा सम्मान (कोलकाता), मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, शमशेर सम्मान और अनिल कुमार सम्मान से विभूषित, शिखर सम्मान (पाखी- 2012)।

देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में कहानियाँ पाठ्यक्रम में/साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट और एन०सी०ई० आर०टी० द्वारा पाठ्यक्रम और एंथालॉजी में संगृहीत/अंग्रेजी, पोल, रूसी, जर्मन और डच भाषाओं में कहानियों के अनुवाद/अब तक 5 कहानी-संग्रह प्रकाशित।

पता : 101, रामनगर, अधारताल,

जबलपुर - 482004

साहित्य सृजन और प्रकाशन विधा में हमारे शहर इलाहाबाद का अपना दर्जा है। बहुत सारे पुरोधा चले गए अपना नाम और सुगन्धि छोड़ कर। आज भी कॉफी हाउस की बैठकें गुलज़ार रहती हैं उन सृजनशील बहसों से और ठहाकों से। कहाँ तक नाम लिए जाएँ और किस्से कहे जाएँ - सिर्फ़ मिठास और चटख़ारे लेने वाले संस्मरण हैं। मेरे कला स्टूडियो 'इम्पैक्ट' का 1971 में प्रारम्भ और बड़े भाई से मुलाक़ात यानी श्री ज्ञानरंजन जी एक आत्मीय संयोग कहा जाएगा। एक लम्बा अर्सा गुज़र गया परन्तु वह स्नेह छाया आज भी अपने ऊपर पाता हूँ। 'पहल ' जिसको उन्होंने अपनी साँस बना लिया निकलती ही रही - निकलती ही रही। मुझे बहुत सारे आवरण बनाने का मौका मिला - मेरा सौभाग्य। भाई ज्ञान जी कैसा लिखते हैं यह तो पढ़ने वाले ही बताएँगे परन्तु एक आदमी जो पढ़ा-लिखा, संवेदनशील, यारबाज़, संगीत और कला का पारखी, ठहाके लगाने वाला और मेहमाननवाज़ी में सिद्ध - मैं जानता हूँ - ज्ञान भाई को। इलाहाबाद छोड़ कर जबलपुर जा बसे फिर भी डोर बँधी हुई है और खींचों तो थरथराहट होती है। प्रस्तुत कहानी संग्रह उन रिश्तों का ख़ाका है जिसको ज्ञानरंजन जी ने 'प्वाइंट ब्लैकं रेंज' से देखा है।

जबलपुर विश्वविद्यालय उन्हें डी०लिट० उपाधि से विभूषित करने जा रहा है - इसे मूल्यांकन न कह के नियति कहा जाए तो उपयुक्त होगा।

कथ्य तथा आवरण

डॉ० आर० एस० अग्रवाल

हास्यरस

लगभग आधे घंटे में कार्रवाई पूरी हो गई और हम लोग रजिस्ट्रार के कमरे से बाहर निकल आए। तीन मित्र जिन्होंने गवाही दी, पत्नी और मुझे लेकर हम पाँच लोग हैं। बाहर निकलते ही मैंने अपने को दूसरा और पराजित अनुभव किया। प्रेम समाप्त हो चुका है और यह बात संदेहजनक नहीं लग रही है कि मैं गलत लड़की से शादी करके निकल रहा हूँ। मैं थोड़ा अलग चलना चाहता हूँ और मैंने ऐसा किया भी, लेकिन यह मुश्किल है कि मैं समझ लूँ कि मेरे अंदर ठीक-ठीक क्या हो रहा है।

अगर प्रेम से छुटकारा मिल गया है तो इसमें दुख की कोई बात नहीं है। दरअसल मुझे समझ नहीं आ रहा है कि क्या किया जा सकता है। मेरी पत्नी संतुष्ट और निश्चिंत है और उसके खिले हुए चेहरे से मुझे प्रसन्नता नहीं हो रही है। यह खिला हुआ चेहरा और कुछ नहीं, विजय का गर्व है। यह स्पष्ट हो गया है कि मैं घाटा खा चुका हूँ और मुझे पराजित करने वाला मेरा साथी तत्काल हर चीज की माँग करने का अधिकारी हो गया है। मैंने अपने को आगाह किया कि आज से यह मेरे पास ही बनी रहेगी, अब और दिनों की तरह तीन घंटे बाद मूवी देखकर या पिकनिक मनाकर नहीं चली जाएगी।

मुझे अपने ऊपर बहुत खीझ आ रही है और अभी बरामदे का काफी लंबा हिस्सा बाकी है। फिर सीढ़ियाँ उतरनी होंगी। इजलास के हाते के बाद कई दूसरी इमारतों का फासला पार करके सड़क तक पहुँचने में न जाने अभी कितनी देर लगेगी।

ऐसी चिंता जीवन में मुझे पहली बार हुई है और ऐसा भय। मैं अपने को बहुत होशियार लगाता था। अब लो। कहीं ऐसा न हो यह चिंता मेरे जीवन और मेरी मृत्यु दोनों को बरबाद कर डाले। शायद मैं बहुत ज्यादा धबरा रहा हूँ जिसके कारण चेहरे पर बनावट पैदा करने में मुश्किल हो रही है। ऐसा ही रहा तो सबको पता लग जाएगा। वह मुझसे पीछे बमुश्किल दो मीटर की दूरी पर है और इस फासले को भी कम करने की कोशिश में है। तेज चलकर। देखो शुरू हो गया न अभी से सब कुछ। अंदर मेरा मन मुझसे कहता है, आपने किया है तो आप ही देखिए, हम क्या करें।

न जाने क्या-से-क्या हो गया। अभी-अभी विवाह होने के पूर्व मुझमें खुशी और तत्परता थी और अब मैं दुखी हो गया हूँ। कमरे में और कमरे से पहले मैं पूर्व-निधारित के अनुसार समय पर पाबंदी के साथ सब कुछ ठीक-ठीक करता रहा, बल्कि छोटे-छोटे तिकड़म भी और सोचने की जरूरत नहीं पड़ी। उस समय कमरे में यहाँ तक कि निष्ठा की छपी हुई शपथ पढ़ते समय मुझे ध्यान है, मैं उसे शुद्ध और प्रभावशाली तरीके से (एक ब्रॉडकास्टर की तरह) पढ़ने का प्रयत्न करता रहा ताकि रजिस्ट्रार और उपस्थित दूसरे लोग प्रभावित हो सकें या उन्हें अच्छा लगे। और अब अजीब बात है मेरी चटनी बनी जा रही है। पता नहीं क्यों इन दिनों ऐसे भी सुबह मैं हल्का और प्रसन्न रहता हूँ और शाम होते तक दुखी और भारी हो जाता हूँ। सुबह जीवन मुट्ठी में रहता है, शाम को चंगुल से बाहर। भगवान जाने क्या-से-क्या हो गया मेरा।

मुझे खयाल आ रहा है, मेरी पत्नी, जब वह पत्नी नहीं थी, मेरे दिल में थी। वह कभी थमती नहीं थी और हमेशा गेंद की तरह उछलती रहती थी। तभी मैंने कल्पना की कि दिल शरीर का सबसे लचीला हिस्सा है। अभी थोड़ी देर पहले धोखेबाज दिल ने इसी लचीलेपन का पुन:प्रदर्शन किया है।

खैर। उसके बाद वह मेरे दिमाग में चलने लगी। चलने क्या लगी बल्कि दौड़ती भी थी। मैंने उसकी तरफ अभी चुपके से देखा, उसे कुछ भी पता नहीं। उसने मुझे अपने देखते हुए पकड़ लिया है, फिर भी वह, मैं क्या सोच रहा हूँ यह कभी समझ नहीं सकती। जब वह दिमाग में दौड़ने लगी तो मैंने सोचा अब गोट बैठा लेनी चाहिए। बस यहीं मेरी चूक हो गई। आश्चर्य है पहले कुछ पता ही नहीं चला। बस इधर रजिस्ट्रार के कमरे से बाहर निकला हूँ और उधर दिमाग में महात्मा बुद्ध आकर बैठ गए। पता नहीं इतनी जल्दी आकर क्यों बैठ गए महात्मा बुद्ध। मैं कुछ दिन तो इसके साथ मजे में काट लेता। कम-से-कम एक पुत्र तो मेरा हो जाता। लेकिन अब निराश होने से क्या होगा, कोई फायदा नहीं, मुझे कम-से-कम इतनी उम्मीद तो करनी चाहिए कि यह दुर्घटना स्थायी नहीं होगी और मेरा आगे का जीवन बोधिसत्व से बचा रहेगा।

अब वह काफी निकट आ गई है। मुझे तब पता चला जब वह सुगंध देने लगी। घबड़ाओ मत देवी, मैंने सोचा, पास आ जाओ लेकिन अगर मैं अपनी हार से परिचित बना रहा तो कभी-न-कभी तुमसे बदला जरूर लूँगा। तुम मेरा अब इससे अधिक कोई और नुकसान नहीं कर सकतीं। बताओ, क्या कर लोगी ? मेरे तीनों मित्र,